

न्यायालय उपखण्ड अधिकारी नसीराबाद (अजमेर) :-

अधिकारी :- श्री राकेश कुमार गुप्ता (आर. ए. एस.)  
 वाद संख्या :- 80/2011

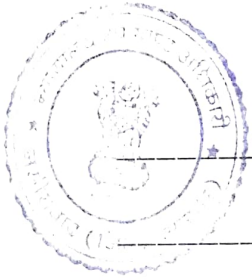
उनवान

1. भोमा पुत्र माला
2. नंगा पुत्र माला जाति रावत निवासी ग्राम मजरा बाडा श्रीनगर, नसीराबाद  
 वादीगण :- जरियें अधिवक्ता श्री अश्विनी धुन्ना

बनाम

1. तेज सिंह पुत्र मंगल सिंह (फौत)
- 1/1. प्रेम देवी पत्नी तेज सिंह
- 1/2. अनीता पुत्री तेज सिंह
- 1/3. लीली पुत्री तेज सिंह
- 1/4. मुकेश पुत्र तेज सिंह
- 1/5. ज्ञाना पुत्री तेज सिंह
- 1/6. माया पुत्री तेज सिंह
- 1/7. दीपक पुत्र तेज सिंह
2. कमला पत्नी भंवरा
3. घासी पुत्र मंगल सिंह
4. अमरचन्द पुत्र बोदू समस्त जाति रावत निवासी ग्राम श्रीनगर, नसीराबाद
5. छोटू पुत्र धन्ना जाति गुर्जर निवासी ग्राम मजरा बावडी, फक्वारा सर्किल श्रीनगर, नसीराबाद
6. खेम सिंह
7. बिरदा सिंह पुत्र अमर सिंह जाति रावत निवासी ग्राम नारगाल (नोलाया) अजमेर
8. राज0 सरकार जरियें तहसीलदार नसीराबाद

प्रतिवादीगण :- 1 से 4 जरियें अधिवक्ता श्री सीताराम रावत  
 8 जरियें राज0 पैरोकार, प्रतिवादी संख्या  
 5 से 7 अनुपस्थित



वाद पत्र अन्तर्गत धारा 88, 188, 92ए राज. काश्त. अधि. 1955

:- निर्णय :-

दिनांक :- 4.11.20

अधिवक्ता वादीगण ने उक्त वाद पेश कर निवेदन किया कि ग्राम श्रीनगर की आराजी का विवरण निम्नवत् है :-

चौसाला		वर्किंग		हाल	
खसरा नम्बर	रकबा	खसरा नम्बर	रकबा	खसरा नम्बर	रकबा
704	11-12-0	1068	3-2-0	1624	0.51
				1624 / 8801	0.56
		1069	5-10-0	1625	0.19

उपखण्ड अधिकारी  
 नसीराबाद (अजमेर)



		1624 / 7768	0.35
1070	3-3-0 में से 1-7-0	1620	0.19
		1680 / 9018	0.21
1071	4-11-0 में से 1-3-0	1617	0.41
		1618	0.14
		1619	0.19

उक्त आराजी साबिक खसरा नम्बर 74 रकबा 11-12-0 राजस्व अभिलेख में सुखा पुत्र मूला पुत्र के नाम दर्ज थी। उसके वारिस पुत्र भंवरलाल व जगमाल ने उक्त भूमि पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 28.11.94 द्वारा वादीगण को बैचान कर कब्जा व दखल सौंप दिया। उक्त विक्रय पत्र दिनांक 28.11.94 को कानूनन वैध कराने के लिये सुखा पुत्र मूला के तीन लड़के रामदेव, श्योदान व रोडू ने वादीगण के पक्ष में दिनांक 10.02.86 को इकरारनामा करवा दिया। व उक्त विक्रय पत्र में अपनी सहमती तहरीर करवायी। हाल खसरा नम्बर 1624/7768, 1625 वादीगण के नाम दर्ज हो गयी। व खसरा नम्बर 1624, 1624/8801 वादीगण ने अपनी पत्नीयों के नाम विक्रय पत्र द्वारा कय कर ली है। वॉर्किंग खसरा नम्बर 1070 व 1071 पर विक्रय पत्र की पालना में नामान्तकरण संख्या 258 दिनांक 05.06.98 द्वारा खातेदार दर्ज किया गया। किन्तु दौराने बन्दोबस्त उक्त आराजी पुनः प्रतिवादीगण के नाम दर्ज कर दी। उक्त इन्द्राज के कारण प्रतिवादीगण आराजी मुतनाजा पर दखलदांजी कर रहे हैं व भूमि को अन्यत्र हस्तांतरण करने पर आमदा है। अतः हाल खसरा नम्बर 1620, 1618/9018, 1624/7768, 1617, 1618, 1619 का खातेदार वादीगण को घोषित किया जावे। प्रतिवादीगण को जरियें स्थायी निषेधाज्ञा पाबंद किया जावे। इस आशय की आज्ञापति बहक वादीगण विरुद्ध प्रतिवादीगण जारी की जावे।

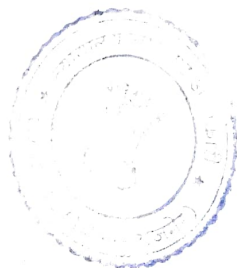
वाद पत्र दर्ज रजिस्टर कर प्रतिवादीगण को जरियें नोटिस तलब किया गया। प्रतिवादी संख्या 5 से 7 प्रकरण में अनुपस्थिति रहे। प्रतिवादी संख्या 1 से 4 ने जवाब पेश कर निवेदन किया कि वॉर्किंग खसरा नम्बर 107 रकबा 3-3-0 व 1071 रकबा 4-11-0 वॉर्किंग जमाबंदी में मूल खातेदार धन्ना पुत्र मेवा के नाम दर्ज था। धन्ना पुत्र मेवा की मृत्यु के बाद उसके वारिस मांगी पत्नी धन्ना, पांचू घासी, रेंवता बीरम, छोटू पि० धन्ना के नामनामान्तकरण संख्या 11 दिनांक 12.03.1986 से वॉर्किंग जमाबंदी में खातेदारी दर्ज की गयी तथा विक्रय से नामान्तकरण संख्या 385 दिनांक 26.05.2000 से उक्त भूमि केता प्रतिवादी संख्या 1 से 4 के नाम दर्ज की गयी। इसी अनुरूप हाल राजस्व अभिलेख में उक्त आराजी प्रतिवादी संख्या 1 से 4 के नाम दर्ज की गयी। इस प्रकार आराजी मुतनाजा जवाबकर्ता की कयशुदा है जिस पर प्रतिवादी संख्या 1 से 4 काबिज काश्त है। अतः वाद सव्यय खारिज किया जावे।

वाद विचारण के दौरान प्रतिवादी संख्या 1 की मृत्यु होने के कारण उसके वारिस रेकार्ड पर लिये गये।

प्रकरण मे निम्न तनकियात कायम की गयी :-

1. आया वादग्रस्त आराजी का वर्तमान इन्द्राज त्रुटिपूर्ण होने से वादी दुरुस्ती का अधिकारी है ?  
— वादीगण
2. आया वाद मियाद बाहर होने से खारिज योग्य है ?  
— प्रतिवादी
3. अनुतोष ?

उपखण्ड अधिकारी  
नसीराबाद (अन्मेर)

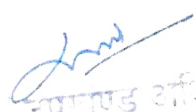


वादी ने वाद के समर्थन में राजस्व अभिलेख व विक्रय के दस्तावेज पेश किये तथा  
अधिवक्ता प्रतिवादी के बयान दर्ज करवाये।  
अधिवक्ता प्रतिवादी ने साक्ष्य नहीं पेश करना जाहिर किया।  
अधिवक्ता सुनी गयी।  
अधिवक्ता का अवलोकन किया। विद्वान अधिवक्तागण की बहस पर मनन किया तनकी अनुसार  
निम्नवत् है :-  
तनकी संख्या 1 :-

वादीगण का कथन है कि उसके द्वारा साबिक खसरा नम्बर 7041 रकबा  
11-12-0 तत्कालीन खातेदार सुखा के वारिस पुत्र भंवरलाल व जगमाल से जरिये पंजीकृत विक्रय  
पत्र क्रय किया था। वादी द्वारा प्रस्तुत नामान्तरण संख्या 668 दिनांक 1.8.68 में उक्त आराजी  
साबिक खसरा नम्बर 704 रकबा 11-12-0 सुखा पुत्र मूला के नाम खातेदारी दर्ज है। सुखा के  
तीन पुत्रों रामेदव, श्यादोन, रोडू पि० सुखा ने दिनांक 10.2.86 को इकरारनामा कर पूर्व के विक्रय  
पत्र को स्वीकार किया है। किन्तु वादी ने ऐसी कोई जमाबंदी पेश नहीं की है जिसमें साबिक  
खसरा नम्बर 704 तत्कालीन खातेदार सुखा पुत्र मूला अथवा उसके वारिसान के नाम दर्ज हो  
साथ ही वादी द्वारा सुखा का शजरा प्रमाण पत्र भी पेश नहीं किया है जिससे स्पष्ट होता हो कि  
सुखा पुत्र मूला के कितने वारिस हैं। साथ ही सुख पुत्र मूला के 5 पुत्रों में से 2 पुत्रों द्वारा ही  
वादीगण के पक्ष में विक्रय किया है अतः साबिक खसरा नम्बर 704 रकबा 11-12-0 का पूर्ण  
विक्रय नहीं माना जा सकता है। अपंजीकृत इकरारनामा के आधार पर राजस्व न्यायालय में  
खातेदारी अधिकार प्राप्त नहीं किये जा सकते हैं। मिलान क्षेत्रफल के अनुसार साबिक खसरा  
नम्बर 74 के वंकिंग खसरा नम्बर 1068 रकबा 6-12-0, 1069 रकबा 5-10-0, 1070 रकबा  
3-3-0 व 1071 रकबा 4-11-0 बने हैं जबकि वादीगण ने अपने वाद में इन वंकिंग खसरा  
नम्बर के आंशिक रकबे का अंकन ही किया है शेष रकबे के बारे में स्थिति स्पष्ट नहीं की है।  
वादीगण का कथन है कि उनके द्वारा खसरा नम्बर 704 रकबा 11-12-0 क्रय किया है। तथा  
खसरा नम्बर 1069 जिसके हाल खसरा नम्बर 1625 व 1624/7768 बने हैं उनके नाम हाल व  
वंकिंग जमाबंदी में दर्ज है। साथ ही वंकिंग खसरा नम्बर 1068 जिसके हाल खसरा नम्बर 1624  
व 1624/8801 बने हैं उनकी पत्नियों के नाम क्रय द्वारा दर्ज है। उक्त वंकिंग खसरा नम्बर  
1068 व 1069 तथा उनके हाल खसरा नम्बर का रकबा 12-2-0 बनता है जो क्रय रकबे से  
अधिक है। खसरा नम्बर 1070 व 1071 का कुल रकबा अधिक है जबकि वादी द्वारा आंशिक  
रकबे का अनुतोष चाहा है। वंकिंग खसरा नम्बर 1070 व 1071 के कई हाल खसरा नम्बर बने हैं  
वादीगण उक्त खसरा नम्बर में से किस खसरा नम्बर के कितने रकबे पर काबिज है यह प्रकरण  
में स्पष्ट नहीं किया है। साथ ही विक्रेता के नाम की जमाबंदी भी पेश नहीं की है। सुखा पुत्र  
मूला जिसे मूल खातेदार वादीगण द्वारा बताया गया है के समस्त वारिसान द्वारा विक्रय नहीं  
करवाया गया है। वादीगण ने अपने वाद में साबिक खसरा नम्बर 704 के समस्त वंकिंग व हाल  
खसरा नम्बर की स्थिति स्पष्ट नहीं की है। वंकिंग खसरा नम्बर 1070 व 1071 वंकिंग जमाबंदी  
में धन्ना पुत्र मेवा से उसके वारिसान के नाम दर्ज हुआ तथा धन्ना पुत्र मेवा के वारिसान द्वारा  
उक्त आराजी का विक्रय प्रतिवादी को किया है। अतः आराजी मुतनाजा का इन्द्राज त्रुटिपूर्ण सिद्ध  
नहीं होता है। अतः तनकी विरुद्ध वादीगण निर्णित की जाती है।

तनकी संख्या 2 :-

तनकी संख्या 1 के अनुसार वादीगण उक्त आराजी पर इन्द्राज दुरुरती के

  
अधिवक्ता  
तनकी संख्या (अंशिक)

नहीं है। अतः इस तनकी के पृथक से विवेचन की आवश्यकता नहीं है।

उक्तानुसार ग्राम श्रीनगर के हाल खसरा नम्बर 1620, 1680/9018, 1624/7767, 1618, 1619 की आराजी पर वादीगण का वाद "खारिज" किया जाता है। पक्षकार खर्चा वहन करे। इस आशय की पर्चा डिक्री जारी हो।

निर्णय सरे इजलास सुनाया गया।



उपखण्ड अधिकारी  
नसीराबाद

